शैलेन्द्र

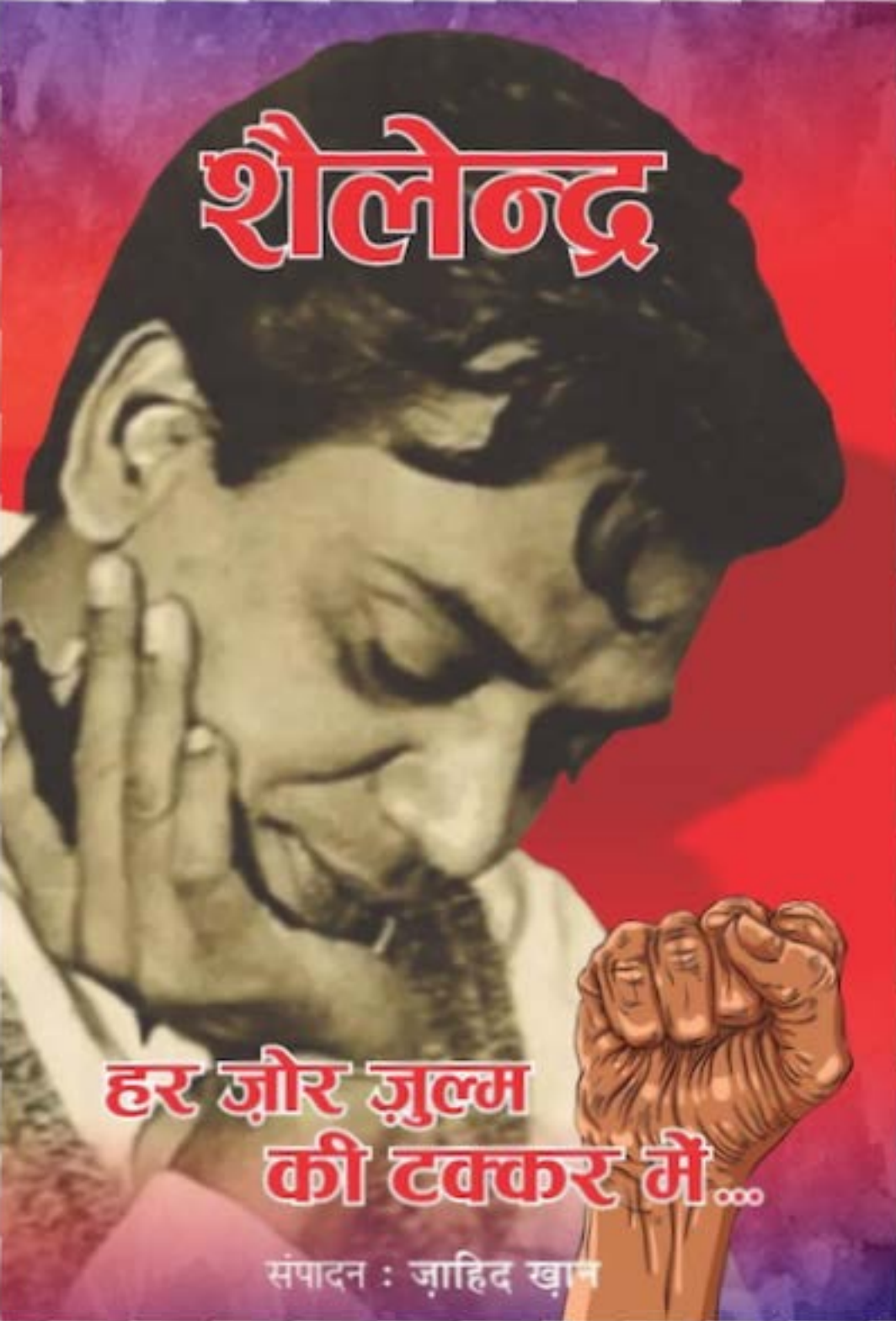

हर ज़ोर ज़ुल्म की टक्कर में...

संपादन : ज़ाहिद ख़ान

शैलेन्द्र

हर ज़ोर-ज़ुल्म की टक्कर में

संपादन

ज़ाहिद ख़ान

(किताब में शामिल लेख की संदर्भ सामग्री और इसमें साहित्य आलोचकों, कथाकारों, फ़िल्म निर्देशकों, गीतकारों और शायरों के अभिमत एवं शैलेन्द्र की कविता और गीत इन किताबों से लिए गए हैं-'न्यौता और चुनौती'-शंकर शैलेन्द्र, 'गीतों का जादूगर शैलेन्द्र'-ब्रज भूषण तिवारी, 'भारतीय साहित्य के निर्माता शैलेन्द्र'-इन्द्रजीत सिंह, 'धरती कहे पुकार के...गीतकार शैलेन्द्र'-संपादक : इन्द्रजीत सिंह, 'गीतकार शैलेन्द्र तू प्यार का सागर है'-संपादक : इन्द्रजीत सिंह। सभी का शुक्रिया और आभार।)

संपादन : ज़ाहिद ख़ान

कवर डिजाइन : 'नेटवर्क कम्प्यूटर्स', शिवपुरी,
मो. : 9893216244

पहला संस्करण : फरवरी, 2024

प्रकाशक : उद्‌भावना
एच-55, सेक्टर-23
राजनगर, गाजियाबाद
मो. : 9811582902

मुद्रक : प्रोग्रेसिव प्रिंटर्स
ए 21, झिलमिल इंडस्ट्रियल एरिया
जी.टी. रोड, शाहदरा, दिल्ली-110095

मूल्य : 100 रुपये

अपनी बात

शैलेन्द्र और विष्णु खरे

मुझे याद नहीं पड़ता कि विष्णु खरे ने कभी शैलेन्द्र पर कुछ लिखा हो। दरअसल आज मुझे अचानक ज़ाहिद ने भूमिका लिखने के लिए कहा तो मुझे खरे जी याद हो आए। मेरी बेटी की शादी का दिन था, खरे जी मौजूद थे और कुछ संयोग ऐसा बना कि बृंदा कारात भी कुछ अन्य वामपंथी मित्रों के साथ वहां थीं। खरे जी ने मुझसे कहा कि तुम अपने मित्रों से परिचय नहीं करवाओगे! मैंने खरे जी का परिचय एक बड़े कवि के रूप में करवाया। बृंदा ने जब कहा कि ''आपको कौन नहीं जानता'' तो खरे जी बहुत ख़ुश हुए। लेकिन उन्हें यह मालूम नहीं था कि बृंदा क्या फ़रमाइश करने वाली हैं। बृंदा ने कहा कि उन्हें आगामी चुनाव के लिए कुछ ऐसे नारे चाहिएं जो हम बैनर बनाकर शहरों में लगा सकें। खरे की हालत यूं कि काटो तो ख़ून नहीं। उनके लिए यह फ़रमाइश उनकी कल्पना से एकदम परे थी। ''१०-१५ दिनों में तो आप कवितानुमा नारे दे देंगे न!'' बृंदा का आग्रह था। बात आई-गई हो गई। मैं बारात की तैयारी में लग गया। बारात अभी आई नहीं थी कि खरे जी मुझे एक कोने में ले गए और अपनी बेचैनी का ज़िक्र करने लगे : ''तुम तो जानते हो कि मुझे केदारनाथ अग्रवाल, शील और ऐसे कई तथाकथित जनकवि कतई पसंद नहीं। इन्होंने केवल तुकबंदी की है। कविता इन्हें छू तक नहीं गई है।'' मैं इस मुद्दे पर भिन्न राय रखता था, लेकिन मेरे पास समय नहीं था कि खरे जी के साथ बहस में उलझूँ। बारात का बैंड मुझे सुनाई देने लग गया था और मुझे पुकारा जा रहा था, लेकिन खरे जी छोड़ें तो मैं जाऊँ। मैंने उस वक़्त उन्हें सलाह दी कि शैलेन्द्र आपको दिए गए काम में मददगार हो सकते हैं। शैलेन्द्र का नाम सुनते ही उनके चेहरे पर एक मुस्कान आ गई और मैं उनके चंगुल से मुक्त हो सका।

एक सप्ताह बाद खरे जी ने २५-३० नारों को मुझे लिख कर दिया और मैंने

देखा कि शैलेन्द्र के गीतों का भरपूर इस्तेमाल उन्होंने इन नारों में किया है। शैलेन्द्र के अलावा उन्हें कोई और जनकवि नहीं भाया। यह काम खरे जी के लिए आसान नहीं था परन्तु यह उनकी वाम के प्रति प्रतिबद्धता थी जिसने यह काम उनसे करवा लिया।

शैलेन्द्र, जिन्होंने अपनी कई कविताओं में नारे लिखे, एक प्रतिबद्ध राजनीतिक कवि थे। आज जब चारों ओर मानवताविरोधी ताकतें हमें हराने की और हमारे हौसले पस्त करने के लिए अपनी पूरी तैयारी में हैं, कितने रचनाकार होंगे जो मनुष्यता की विजय पर इतने गहरे विश्वास के साथ कह सकते होंगे :

''सच है डूबा-सा है दिल जब तक अन्धेरा है,
इस रात के उस पार लेकिन फिर सवेरा है
हर समन्दर का कहीं पर तो किनारा है
आज अपना हो न हो पर कल हमारा है।''

ज़ाहिद ख़ान ने बहुत कम समय में और पूरी लगन व निष्ठा के साथ इस किताब का संपादन किया है। तरक्कीपसंद तहरीक पर वे सक्रिय लेखन निरंतर करते रहे हैं और उनकी काबिलियत की दूर-दूर तक एक पहचान बन चुकी है। उद्‌भावना से उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। पाठकगण उनके इस प्रयास को भी सराहेंगे, ऐसा मेरा विश्वास है।

आपका

अजेय कुमार

संपादक, उद्‌भावना

7 फरवरी, 2024

विषय सूची

1.	अपनी बात : शैलेन्द्र और विष्णु खरे	**अजेय कुमार**	3
2.	आत्मकथ्य : मैं, मेरा कवि और मेरे गीत	**शैलेन्द्र**	7
3.	हर ज़ोर-जुल्म की टक्कर में...	**ज़ाहिद ख़ान**	13
4.	मैं अलस भोर की नीली रौशनी हूं	**राजेश जोशी**	34
5.	शैलेन्द्र के गीतों को सुनकर हम बेहतर इंसान बने	**अरुण कमल**	37
6.	मेरा नाम राजू, घराना अनाम यानी शैलेन्द्र का घराना	**विजय पाडलकर**	42
7.	इश्क़, इंक़लाब और इंसानियत के कवि	**डॉ. इंद्रजीत सिंह**	54
8.	'तीसरी कसम' कैसे बनी क्लासिक फिल्म	**जयनारायण प्रसाद**	64
9.	शैलेन्द्र के कालजयी गीत, जो हमेशा यादों में रहेंगे	**दीप भट्ट**	68
10.	'भारतीय साहित्य के निर्माता शैलेन्द्र' की समीक्षा		73
11.	आलोचकों की नज़र में गीतकार शैलेन्द्र		76
12.	फ़िल्मी दुनिया की नज़र में शैलेन्द्र		80
13.	शैलेन्द्र के जनगीत		85
14.	शैलेन्द्र के लोकप्रिय फ़िल्मी गीत		95
15.	शैलेन्द्र के हस्तलिखित दो गीत		111

आत्मकथ्य

मैं, मेरा कवि और मेरे गीत

❑ **शैलेन्द्र**

मैं, मेरे गीत और मेरा कवि विरोधाभास के बावजूद अरसे से साथ हैं। सबसे पुरानी स्मृति शायद तब की है, जब अलस सुबह नींद खुली थी, जाड़े के दिन थे, रजाई में लिपटा मैं बिस्तरे पर बैठा था। पिता फ़ौज में थे, सवेरे ही तैयार होकर परेड में पहुंचना होता था, स्नान करने जा रहे थे और गा रहे थे, 'अब कहां जायेगो रे लीन्हों हाथ पकड़ के।' माखनचोर कृष्ण पकड़ में आ गये। नन्हे गोपाल कृष्ण की बचपन में कल्पित यह तस्वीर जीवन भर नहीं भूलेगी। पिता तो भक्ति-रस के गीत गाते ही थे, माँ भी अच्छा-ख़ासा गा लेती थीं। चक्की पीसते हुए, काम करते हुए उनका गीत, 'हँस पूछे जनकपुर की नार, नाथ कैसे गज के फंद छुड़ाए।' गीत, संगीत और काव्य से मेरा यही प्रथम परिचय था। गीत, संगीत और काव्य में पहले योगदान की भी वह रात, जब शिवनारायण पंथी बिरादरी के लोग बसंत पंचमी की रात को आरती में गा रहे थे, 'दीन दयालु कृपालु महा प्रभु.....दीन दयालु कृपालु महा प्रभु।' मैं भी बुजुर्गों और समवयस्कों के साथ गा रहा था और डफ़ली बजा रहा था। लय की समझ प्रायः प्राकृतिक होती है, क्योंकि बाद में ऐसे लोग भी देखने में आये हैं, जिन्हें ज़िंदगी भर ताल सिखाइए, तो नहीं सीख सकेंगे।

प्रकृति के विस्मयकारी कार्यकलाप भी बहुत बचपन में ही देखने को मिले। कोहमरी (अब पाकिस्तान में) की वे रातें, चीखने-चिंघाड़ने की आवाज़ें आ रही हैं, कोई जानवर है या प्रेत? भयभीत जागता रहा हूं। कब नींद आयी मालूम नहीं। सवेरा हुआ, तो दरवाज़ा नहीं खुलता। बर्फ़ जम गयी है। पिताजी फावड़े से बर्फ़ हटा रहे हैं। बर्फ़ हटेगी, तो दरवाज़ा खुलेगा, और कोहमरी में ही विदेशी शासन के अन्याय का पहला अनुभव हुआ था। मैं और बहन श्यामा तितलियां पकड़ रहे थे। नीचे ढाल पर

सड़क से जा रहे थे, कॉन्वेंट के अंग्रेज़ विद्यार्थी लड़के। किसी एक ने पत्थर मारा। बहन की कनपटी से ख़ून बह रहा था। हम काले अपने बाप-दादाओं की ज़मीन पर स्वच्छंद क्यों घूम रहे हैं?, इसी की जलन थी उन गोरे संपोलों को।

मैं, मेरे गीत और मेरा कवि तीनों यदि दौड़ें, तो मैं ही विजयी होगा। इसलिए नहीं कि अहं बोल रहा है, केवल इसलिए कि यह चोर बदन मैं, मेरे गीत और मेरे कवि पर बराबर हावी रहा है और अपना प्रभाव डालता रहा है-बुरा और अच्छा। इस 'मैं' का कहना है कि कलाकार कोई आसमान से टपका हुआ जीव नहीं है, बल्कि साधारण इंसान है। यदि यह साधारण इंसान नहीं, तो जनसाधारण के मनमानस के दुख-सुख को कैसे समझेगा और उसकी अभिव्यक्ति कैसे करेगा? इस 'मैं' ने मेरे कवि के वैभव को बहुत बार नोचा-खसोटा है और मेरे 'गीतकार' को समय-असमय नींद से झकझोरा है। मेरे कवि के चेहरे पर इसके नाखून के दाग हमेशा के लिए रह गये हैं। मेरा कवि महीन धोती और रेशमी कुर्ता कब से सहेज कर रखे है, मगर पहनने का अवसर ही नहीं मिलता। बिना कमानी का चश्मा भी बेकार पड़ा है। क्योंकि 'मैं' का कहना है आंखें अभी तेज़ हैं।

उस दिन 'मैं' ही की ज़िद थी कि मैं कॉलेज छोड़ रहा था, कवि कलप रहा था और गीतकार रो रहा था। सारे आदर्श और सपने छोड़कर जा रहा था, इंजीनियरिंग पढ़ने। कॉलेज के अधिकारियों का कहना था, पैसे ही चाहिए, तो यहां शिक्षक बन जाओ। पढ़ो भी और पढ़ाओ भी। लेकिन 'मैं' कि अड़ा हुआ था। मनोविज्ञान के प्रोफ़ेसर मेहता ने चीरने वाली आंखों से देखा था, और हिन्दी के प्राध्यापक गोपालदत्त शर्मा ने पूछा था,

''तो अब क्या मशीनों पर कविता लिखोगे?''

मशीनें गाती है, यह मुझे भी उस समय नहीं मालूम था। हां हां....आ...आ...सा...सा और मशीनों के साथ गाया जा सकता है। तानपूरे की तरह मशीनें भी स्वर क़ायम कर सकती हैं। 'सा' मिल गया है, दिन की चिलचिलाती धूप में भी आप गा सकते हैं,

रात्रि का अंतिम प्रहर है
झिलमिलाते हैं सितारे
वक्ष पर युगबाहु बांधे
मैं खड़ा सागर किनारे।

(बच्चन)